International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-10-2021, Accepted: 23-10-2021, Published: 09-11-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 16-17

प्रसाद के काव्य की प्रासंगिकता

डॉ. आशुतोष कुमार द्विवेदी[1], पद्मिनी द्विवेदी[2]

[1] प्राध्यापक, हिन्दी, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोध छात्रा, शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

कामायनी महाकाव्य, स्कंदगुप्त तथा चन्द्रगुप्त जैसे कालजयी नाटकों के विरूद्ध सामाजिक – राजनीतिक दृष्टि से कतिपय आक्षेप किये गये हैं। इन आलोचकों का तर्क है कि कामायनी की कथा – वस्तु अत्यंत सुदूर अतीत से सम्बन्ध होने के कारण वर्तमान जीवन की समस्याओं से सर्वथा पराङ्मुख है। वह मानव – जीवन की विषमताओं का जो समाधान प्रस्तुत करती है, वह यथार्थ से एकदम दूर और एकांत रहस्यात्मक है।मानव – सभ्यता के विकास का यह कैसा अभिलेख हैं जिसमें इतिहास को मोड़ देने वाले महान आंदोलनों का प्रतिबिंब भी नहीं मिलता। शायद इसी मानसिकता के कारण यह कहा गया है कि प्रसाद हमारे लिए आज उतने प्रासंगिक नहीं हैं जितने प्रेमचन्द और निराला इन आक्षेपों में प्रासंगिकता के प्रत्यक्ष और एक सीमा तक सतही रूप को ग्रहण किया गया है। वास्तव में यथार्थ के दो स्तर होते हैं – एक प्रत्यक्ष और दूसरा मौलिक या तात्विक। इसी तरह प्रासंगिकता के भी दो स्तर होते है।

मूलशब्द: अतीत की वर्तमानता' प्रसांगिकता की प्रेरक या मूल धारणा है।

प्रस्तावना

अतीत के दो रूप हो सकते है – अतीत में रचित काव्यकृति और अतीत की विषय – वस्तु पर आधृत कलाकृति। प्रत्यक्षवादी विचारक इन दोनों के विषय में यह प्रश्न सहज ही कर सकता है कि उनकी वर्तमान जीवन में क्या सार्थकता है ? इस प्रकार 'अतीत की वर्तमानता' प्रासंगिकता की प्रेरक या मूल धारणा है। इस प्रसंग में पहला तथ्य जो हमारे सामने आता है। दो उपन्यासों और अनेक कहानियों के अतिरिक्त उनके साहित्य की विषय – वस्तु का सम्बन्ध अतीत के साथी ही है। उनकी कामायनी की कथा तो आदिम अतीत को लेकर चलती ही है, नाटकों अनेक कहानियों और अपूर्ण उपन्यास 'इरावती' की कथावस्तु का उपजीव्य भी प्राचीन इतिहास ही है। इधर, उनकी अंतिम रचना के प्रकाशन तथा निधन को भी कई वर्ष बीत चुके हैं और ये भी अब अतीत के अंग बन गये हैं। अतः उनके विषय में प्रासंगिकता का प्रश्न अप्रासंगिक नहीं है।

कलाकार अथवा कलाकृति को निरखने – परखने के सामान्यतः दो दृष्टिकोण हैः (1) सौंदर्यमूलक अथवा कलापरक और (2) सामाजिक – नैतिक दृष्टिकोण। इनमें से सौन्दर्यमूलक प्रतिमान के आधार पर प्रसाद को कालजयी कृतियाँ का गौरव अश्रुण्ण है और इसीलिए उनकी सार्थकता भी कालातीत है, अर्थात उनकी रसोद्बोधन की क्षमता और उससे प्रेरित कलात्मक मूल्य केवल छायावाद युग – वर्तमान शती के तीसरे – चौथे दशक – तक ही सीमित नहीं हैं, वरन् वर्तमान और परवर्ती युगों के लिए भी उनकी सार्थकता अंसदिग्ध है। कला के शाश्वत प्रतिमानों का आधार यही है कि कला प्रत्येक देश और काल के सह्रदय – समाज की चेतना में, परिवेशगत प्रभावों से ऊपर उठकर, सौन्दर्य – बोध जागृत कर सकती है। सौन्दर्य चिरंतन सुख है कामायनी, प्रलय की छाया, लहर तथा चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त जैसे नाटकों के गीत उधर स्कन्दगुप्त, चाणक्य, शक्तिमती, देवसेना आदि के अमर चरित्र अपने उदात्त और गतिमय प्रभाव के कारण किसी भी देश काल के लिए प्रसांगिक है।

अध्ययन क्षेत्र

कामायनी की प्रासांगिकता का मूल्यांकन इसी तलवर्ती स्तर पर करना होगा। कामायनी मानव – चेतना के विकास का महाकाव्य है, ऐहिक जीवन के संघर्ष का नहीं, यह काव्य मानव – चेतना की मौलिक समस्या को लेकर चलता है और वह समस्या है उसकी तीन वृत्तियों – भाव, कर्म और ज्ञान के समन्वय की। जब तक ये तीनों वृत्तियां विश्रृंखलित अस्त – व्यस्त होंगी, तब तक मानव जीवन निरंतर संघर्ष और क्लेश से आक्रांत रहेगा। इस समस्या का एक ही समाधान है, और वह है आस्तिक बुद्धि के द्वारा भाव, कर्म और ज्ञान का सामंजस्य।

मनोविज्ञान में इसे ही चित्त की समाहिति और दर्शन मे सामरस्य के नाम पर अभिहित किया जाता है। जब तक मानव – चेतना की मौलिक वृत्तियों भाव, कर्म और ज्ञान में असामंजस्य रहता है, तब तक वह क्लेश और द्वंद्व से ग्रस्त रहती है। किन्तु जब इन तीनों का समीकरण हो जाता है तब चेतना निर्मल और विशद हो जाती है। दार्शनिक शब्दावली में चितवृत्तियों की यह समीकृति या समाहिति ही सामरस्य है। आधुनिक मानव – सभ्यता का भी संकट यही है। आज विज्ञान की प्रगति एक दिशा में हो रही है, कर्म की प्रतीक राजनीति की दिशा दूसरी है और भावना से परिचालित धर्म – संस्कृति का विकास पृथक रूप से हो रहा है अर्थात वर्तमान सभ्यता की इन तीनों प्रमुख प्रवृत्तियों का विकास एक दूसरे से निरपेक्ष रूप में हो रहा है। इसलिए आज मानव – जीवन सर्वथा अस्त व्यस्त और संत्रस्त हो गया है। इस संकट से मुक्ति का केवल एक ही उपाय है और वह यह है कि मानव – कल्याण को केन्द्र में रखकर विज्ञान, राजनीति और धर्म – संस्कृति में सामंजस्य स्थापित किया जाय। प्रसाद ने आधुनिक सभ्यता की इस विषम समस्या का शाश्वत समाधान प्रस्तुत किया है। देश – काल की सीमाओं से मुक्त, सार्वकालिक और सार्वभौम स्तर पर विवेचना एवं समाधान करना – यही तो कालजयी कृति, विशेष रूप से महाकाव्य का मुल लक्षण हैं। ––

चेतना का सुदंर इतिहास,
अखिल मानव – भावों का सत्य –
विश्व के ह्रदय – पटल पर दिव्य
अक्षरों में अंकित हो नित्य। (कामायनी)

प्रसाद ने एक तो भेद – बुद्धि का विरोध किया है, आस्तिक बुद्धि का नहीं। इसके अतिरिक्त इड़ा की भूमिका भी कामायनी में नगण्य नहीं है। इड़ा के अनुशासन के द्वारा श्रद्धा के पुत्र मानव के व्यक्तित्व विकास का वृत्त पूर्ण होता है। उधर स्वयं मनु के चरित्र में भी इड़ा के सम्पर्क में रहने के बाद ही, स्थिरता आती है कामायनी में उस भेद – बुद्धि का विरोध किया गया है विकल्पात्मक होने के कारण द्वंद्व को जन्म देती है। कर्म का विरोध भी कामायनी में नहीं किया गया है', 'कर्म का भोग, भोग का कर्म' यही जड़ का चेतन आनंद। 'श्रद्धा सर्ग' मे श्रद्धा ने कर्म का जो प्रेरक संदेश दिया है उससे इस तरह की शंकाए निर्मूल हो जाती हैं',

डरो मत अरे अमृत संतान
अग्रसर है मंगलमय वृद्धि।
पूर्ण आकर्षण जीवन केन्द्र
खिंची आवेग सकल समृद्धि।
विश्व की दुर्बलता बल बने,
पराजय का बढ़ता व्यापार।
हंसाता रहे उसे सविलास,
शक्ति का क्रीड़ामय संचार।
शक्ति के विधुत कण, जो व्यक्त
विकल बिखरे हैं, जो निरूपाय
समन्वय उनका करे समस्त
विजयिनी मानवता हो जाय। (कामायनी)

प्रसाद ने 'रहस्य सर्ग' में जिस कर्म का तिरस्कार किया है, वह भौतिक संघर्ष का प्रतीक है जिसके मूल में स्वार्थ – साधन की प्रेरणा रहती है। रचनात्मक कर्म तो, जिसका लक्ष्य होता है – आत्म – कल्याण तथा विश्व – कल्याण, जीवन का परम पुरूषार्थ है।

प्रसाद नारी के प्रेम और प्रेम के मूल मंत्र को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया है। जिसमें अहंकार की चेतना और स्वार्थ भावना का विसर्जन हो जाता है। श्रद्धा मानव के पूरक रूप में आधुनिक नारी की भाँति प्रतीत होती है।

मैं अपने मनु को खोज चली
सरिता मरू नग या कुंज गली
वह भोला इतना नहीं छली
मिल जायेगा, हूँ प्रेम पली। (कामायनी)

प्रसाद के मन में तो दो नहीं, तीन काल थे उन्होंने कहा की ''अतीत और वर्तमान को देखकर भविष्य का निर्माण होता है इसलिए हमको साहित्य में एकांगी लक्ष्य नहीं रखना चाहिए।'' इसलिए उन्होंने इतिहास का पुनर्लेखन नहीं किया, बल्कि उसमें से ऐसे युगों और चरित्रों को उठाया जो वर्तमान को भी दृष्टि और दिशा देते हैं। इसलिए प्रसाद की ऐतिहासिक रचनाओं की प्रासंगिकता आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है।

निष्कर्ष

प्रसाद गंभीर जीवन – दृष्टा थे। उन्होंने समकालीन आंदोलनों से दूर हटकर अपने युग के राजनीतिक – सामाजिक जीवन का अत्यंत गहन अध्ययन किया था। तत्वदृष्टा होने के कारण उन्होंने सुधारवादी दृष्टिकोण को कभी प्रश्रय नहीं दिया। किन्तु अपने परिवेश की समस्याओं का जैसा तात्विक विवेचन – विश्लेषण उनके प्रौढ़ काल के साहित्य में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। आधुनिक समाजवादी आलेचना के उद्‌गम – शिखर कार्ल मार्क्स ने कालजयी कृतियों के गौरव का संरक्षण करने के लिए ही कला की सापेक्षिक स्वायत्तता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। उनका कथन है कि कला की प्रकृति द्वंद्वात्मक होती है – विशेष परिवेश से उद्‌भूत होकर परिणति अथवा फलयोग की स्थिति में वह सार्वभौम बन जाती है। आरम्भिक रचना – प्रक्रिया में देशकाल से प्रभावित होकर भी वह परिणति अवस्था में उनसे मुक्त होकर स्वायत बन जाती है। प्रसाद की कालजयी रचनाओं की प्रासंगिकता का विचार इसी दृष्टि से करना चाहिए।

सन्दर्भ सूची

1. कामायनी – जयशंकर प्रसाद, सम्पादक – रत्नशंकर प्रसाद, – लोक भारती प्रकाशक 15 – ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहावाद।
2. चन्द्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद, सम्पादक – रत्नशंकर प्रसाद, – लोक भारती प्रकाशक 15 – ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद।
3. स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद, सम्पादक – रत्नशंकर प्रसाद, – लोक भारती प्रकाशक 15 – ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहावाद।
4. प्रसाद और कामायनी – डॉ. नगेन्द्र नेशनल पब्लिशिंग हाउस। मूल्यांकन का प्रश्न
5. जयशंकर प्रसाद – सम्पाद – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – अभिव्यक्ति प्रकाशन 847, विश्वविद्यालय मार्ग इलाहाबाद।